प्रजनन के लिए उपयोग हेतु सांडो का प्रबंधन

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र
संयुक्त निदेशालय प्रसार शिक्षा
भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243122 (उ. प्र.)

प्रजनन के लिए उपयोग किये जाने वाले सांड वीर्य उत्पादन केन्द्र की एक महत्वपूर्ण इकाई होते हैं। उत्तम प्रबंधन करके चयनित सांडो का अधिकतम प्रयोग किया जा सकता है। सांडो के द्वारा उत्पादित वीर्य सांड की नस्ल, आकार एवं उम्र पर निर्भर करता है।

1. उपयुक्त चारे की आपूर्ति

• अच्छी गुणवत्ता वाले चारे की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति एक महत्वपूर्ण कारक है।

• 15–20 किलो हरा कटा हुआ चारा (बरसीम, जई, मक्का इत्यादि) प्रत्येक सांड को प्रतिदिन खिलायें।

• 5–6 किलो सूखा चारा प्रति सांड प्रतिदिन खिलायें। सूखा और हरा चारा अलग–अलग खिलायें।

• दाना 5.5 किलो की दर से प्रति 500 किलो के सांड को प्रतिदिन दो भागो में बॉटकर सुबह एवं शाम को खिलायें।

2. पीने योग्य पानी की आपूर्ति

• स्वच्छ एवं इच्छानुसार पानी जो कि परजीवियों से मुक्त एवं पीने योग्य हो, की आपूर्ति सुनिश्चित करें।

• पानी के नांद की नियमित रूप से सफाई करें।

3. आवास एवं ग्रहतल

• सांडो पर सीधी सूरज की रोशनी नहीं पड़नी चाहिए। सांड गृह हवादार होना चाहिए।

• सर्दियों में सांडो को 2–3 घण्टो के लिए सूरज की रोशनी में बाहर रखें। अत्यधिक सर्दी से बचाएं।

• सांड गृह में प्रत्येक सांड के लिए ढकी हुई जगह लगभग 12 मीटर^2 (3मी0x4मी0) एवं खुली जगह 27 मीटर^2 (3मी0x9मी0) होनी चाहिए।

• गर्मियो में माहिश सांडो को नियमित सुबह के समय में स्नान कराने के अलावा सांयकाल में भी स्नान करायें जिससे उन्हें गर्मी के तनाव से राहत मिल सके। नहलाने के बाद नायलोन ब्रुश से सवांरे जिससे उनकी खाल चमकदार बनी रहे।

• खुली जगह की फर्श मुलायम होनी चाहिए (चिकनी मिट्टी एवं रेत का मिश्रण) अगर कठोर हो तो यह फिसलने वाला नही होना चाहिए एवं जल निकासी की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।

• खुले बाडे एवं ढकी हुई जगह के दरवाजे अलग–अलग होने चाहिए।

4. व्यायाम

• एक दिन छोड कर करीब एक घंटे के लिए प्रत्येक सांड को व्यायाम करायें।

• वीर्य संग्रह वाले दिन व्यायाम ना करायें।

5. टीकाकरण, जॉच एवं स्वास्थय देखभाल के उपाय

• सांडो का प्रतिवर्श खुरपका–मुॅहपका, गलघोटू एवं ब्लैकक्वार्टर के लिए टीकाकरण कराना चाहिए।

• सांडगृह में शामिल करने से पहले सांडो की ब्रुसेलोसिस, टी.बी. , जे.डी., आई.बी.आर, कैम्पाइलोबैक्टर, ट्राईकोमोनियोसिस आदि बीमारियों के लिए नामित प्रयोगशाला में जांच करायें एवं उसके बाद प्रतिवर्श जांच करायें।

• सांडगृह एवं रास्तो की ग्लूटरएल्डिहाइड अथवा सोडियमकार्बोनेट (4%) से साप्ताहिक अन्तराल पर सफाई करायें।

• वाह्य परजीवियों के रूकाव एवं नियंत्रण के लिए ब्यूटाक्स का छिडकाव करवायें।

- बढे हुए खुरो की समय–समय पर छटनी करवायें।
- लिंग के मुख पर बालो की छटनी (1–2 सेमी0 की लम्बाई तक) करवायें।
- वीर्य संग्रह से पहले सांड को अच्छी तरह से नहलायें।
- सांड के निचले हिस्से को खासतौर पर साफ करें जिससे नीचे लगा गोबर अच्छी तरह से साफ हो जाये।
- शिश्न गुहा की 0.9%नार्मल सैलाइन से 10–15 दिनों के अन्तराल पर धुलाई करवायें।

संरक्षण : **डा0 राज कुमार सिंह**
निदेशक, भ0कृ0अ0प0–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसांधन संस्थान, इज्जतनगर– 243122(उ0प्र0)

मार्गदर्शन: **डा0 महेश चन्द्र**
संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

लेखक : **डा0 एस.के. घोष एवं डा. जे.के. प्रसाद**
प्रधान वैज्ञानिक, जनित्र द्रव्य केन्द्र

संपादन : **डा0 रूपसी तिवारी**
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसधांन संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क :
आई0वी0आर0आई0 हेल्पलाइन, 0581–2311111
किसान कॉलसेन्टरः 1800–180–1551
आई0 वी0 आर0 आई0 बेवसाइट : www.ivri.nic.in